25/9/64 रात्रि क्लास :– ज्ञान सूर्य भी है, ज्ञान चंद्रमा भी है, ज्ञान लकी सितारे भी हैं। इन सब सितारों में जास्ती खातरी होती है कुमारका की; क्योंकि सारा दिन ज्ञान में लगी पड़ी है। प्वाइंट्स लिखकर आती है, फिर करेक्शन मिलती है, फिर लिखती है, तो कितनी धारणा होती होगी। बादल भर रहा है फिर बॉम्बे में जाकर बरसेगा। बादल बरस कर फिर यहाँ मंगाय देंगे। फिर जयपुर, अजमेर जाकर गीता (छपा)वेंगे। ये है ज्ञान मानसरोवर। वास्तव में तो सब बच्चे ज्ञान मानसरोवर में पड़े रहते हैं। सारी दुनिया विषय सागर में पड़ी हुई है और तुम ज्ञान मानसरोवर में। कृष्ण को भी सभी अपना बाप न मानेंगे; इसलिए उनको भगवान नहीं कह सकते। परमपिता परमात्मा, जिसको ईश्वर–प्रभु कहा जाता है, कृष्ण को नहीं। क्रियेटर एक होता है। वो है मनुष्य सृष्टि का रचता। भगवान भी उनको, मनुष्य को, देवता को भी नहीं कह स(कते)। ब्र०वि०शं० को भी भगवान नहीं कह सकते। तुम बच्चों के लिए बाप को सिद्ध करना बड़ा सहज है। पतित–पावन बाप ही है। भगवानुवाच्य मैं दैवी राज्य स्थापन, आसुरी राज्य विनाश करता हूँ। बाप से वर्सा मिलेगा ही मुक्ति–जीवनमुक्ति का। ये बातें बहुत सहज हैं धारण करने की। तुम ईश्वर की संतान बने हो तो ब..... भरना चाहिए। हम उनके बच्चे बने हैं जो स्वर्ग का स्थापक है। वो स्वर्ग की रचना रचते हैं। फादर शोज़ सन। फादर सन को भी, डॉटर को भी समझाते हैं; क्योंकि मात–पिता हैं। दोनों को ये नॉलेज समझाई जाती है त्रिकालदर्शी वा स्वदर्शनचक्रधारी बनाने का। फिर ये ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। राजयोग बाप ही सिखाय राजाई स्थापन करते हैं। वो पार्ट (दूसरा) कोई बजाय नहीं सकते। ऐसी–2 प्वाइंट्स बहुत सहज है। बच्चे समझते हैं जो पास्ट हुआ सब ड्रामा का खेल है। वैराइटी धर्मों का झाड़ भी बुद्धि में है। यहाँ हूबहू घर की भासना रहती है। वो दूसरी जगह नहीं हो सकती। अब ही भासना मिल सकती। मम्मा–बाबा अक्सर रूठ तो जाते नहीं हैं। ॐ